ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 181-182
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 कुसुम यादव
एसो0 प्रोफेसर– बी0एड0 चरण सिंह पी0जी0 कालेज, हेओरा, इटावा, (उ0प्र0), भारत

Received- 10.12. 2021, Revised- 15.12. 2021, Accepted - 19.12.2021 E-mail: kusumy845@gmail.com

सारांशः ***शोधकर्ता द्वारा चयनित समस्या का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना था। जहाँ शोध की मुख्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर निम्न एवं उच्च पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है। शोध के लिए शोधार्थी द्वारा आगरा के जनपद के माध्यमिक स्तर के पाँच विद्यालयों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। अध्ययन की प्रकृति को देखते हुए शोधार्थी ने अपने अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। शोधार्थी ने विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण सम्बन्धी आंकड़ों के संग्रहण के लिए डॉ0 तारिश भाटिया एवं डॉ0 चरनजीत कौन द्वारा निर्मित एवं प्रमाणित पारिवारिक वातावरण मापनी एवं विद्यालयी समायोजन सम्बन्धी आंकडों के संग्रहण के लिए प्रो0 के.पी. सिन्हा एवं प्रो0 आर.पी. सिंह (पटना) द्वारा निर्मित एवं प्रभावित विद्यालयी समायोजन मापनी का प्रयोग करते हुए सह सम्बन्ध गुणांक की गणना की है। जिसके आधार पर यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का निम्न ऋणात्मक प्रभाव पाया गया जबकि निम्न पारिवारिक वातावरण का अत्यन्त निम्न धनात्मक प्रभाव पाया गया। इसी तरह माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का उच्च धनात्मक एवं निम्न पारिवारिक वातावरण का निम्न ऋणात्मक प्रभाव पाया गया।***

कुंजीभूत शब्द– परिकल्पना, माध्यमिक स्तर, पारिवारिक वातावरण, यादृच्छिक विधि, विद्यालयी समायोजन, संग्रहण।

शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्व है। जब बालक जन्म लेता है, तो वह आंशिक ईश्वरीय शक्ति लेकर पैदा होता है परन्तु इस शक्ति का संवर्धन शिक्षा द्वारा किया जाता है। शिक्षा के द्वारा भी व्यक्ति अपनी सभ्यता से अर्जित अपनी संस्कृति उन्मुख होता है। व्यक्ति के जीवन में उदारता, सौम्यता, प्रखरता, प्रवीणता, उत्तमता, उत्कृष्टता, कौशलता के दर्शन शिक्षा द्वारा ही सम्भव है।

बालक की व्यक्तिगत प्रगति, शारीरिक, मानसिक, भावात्मक तथा सामाजिक विकास तब तक भली–भाँति नहीं हो सकता है जब तक कि वह शिक्षा का अर्जन न करे। समाज में सुख–समृद्धि, वैभव, प्रतिष्ठा, लोकप्रियता भी शिक्षा के माध्यम से प्राप्त होता है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में वांछित प्रार्थी द्वारा बालक की मूल प्रवृत्तियों का विकास किया जाता है। शिक्षा के सम्बन्ध में गांधी कहते हैं कि शिक्षा जो मेरा अभिप्राय व्यक्ति की आत्मा, मन तथा शरीर भी उत्कृष्ठता से है।"

घर, कुटुम्ब या परिवार मानव–समाज की प्राचीनतम आधारभूत इकाई है। इसे व्यक्ति के जीवन की प्रथम पाठशाला भी कहा जाता है, परिवार में ही बालक के व्यक्तित्व का विकास, वंशानुक्रम, संस्कारों एवं पर्यावरण से क्रिया–प्रतिक्रिया के फलस्वरूप धीरे होता है। परिवार का व्यक्ति के शैक्षिक, बौद्धिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक विकास आदि में महत्वपूर्ण योगदान है। परिवार एक से अधिक दम्पत्तियों एवं बनाने का सामाजिक समूह है जिनके मध्य रक्त सम्बन्ध उत्तरदायित्वों के पूर्व सम्बन्ध होते हैं। क्लेमर कहते है कि परिवार से हम सम्बन्धों की वह व्यवस्था समझते है जो माता–पिता तथा संतानों के मध्य पायी जाती है।

अध्ययन की आवश्यकता– बालक का व्यक्तित्व, मनोशारीरिक एवं वातावरण के साथ गतिशील अन्तःक्रिया है। बालक के समायोजन के लिए जैविक कारक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। बालक के समायोजन में समाजीकरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है तथा यह समाजीकरण की प्रक्रिया बालक के परिवार से प्रारम्भ होती है। सामान्यतः माध्यमिक स्तर पर बालक बाल्यावस्था को त्यागकर किशोरावस्था की ओर उन्मुख होता है। ऐसी स्थिति में बालक–बालिकाओं में शारीरिक परिवर्तन होते हैं। बालक के आदर्शों और मूल्यों पर परिवार के क्रिया कलापों तथा संस्कारों का सीधा प्रभाव पड़ता है।

बालक के समायोजन पर समाज का सीधा प्रभाव पड़ता है। बालक विद्यालय से औपचारिक शिक्षा प्राप्त करता है। वहाँ मात्र छः घंटों तथा दिन का शेष समय परिवार के साथ ही व्यतीत करता है। अतः परिवार की भूमिका का अध्ययन आवश्यक है।

माध्यमिक विद्यालय पर समाज का सीधा प्रभाव पड़ता है। माध्यमिक विद्यालय में बालक के समायोजन में अनेक समस्यायें आती है। जैसे– अनुशासनहीनता, ड्रॉपआउट एवं अपराधी प्रवृत्ति इत्यादि। बालकों की शिक्षा–दीक्षा देखभाल तथा सुसमायोजन आदि में विद्यालय के परिवार एवं अभिभावकों के साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है। अतः शैक्षिक

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

नीतियों को तय करते समय पारिवारिक वातावरण का ध्यान रखना अति आवश्यक है जिससे कि विद्यार्थियों का माध्यमिक स्तर के विद्यालय में समायोजन उचित ढंग से हो सकें। इस प्रकार पारिवारिक वातावरण बालक के समायोजन को किस सीमा तक प्रभावित करता है आदि तथ्यों से अनुसंधानकर्ता को इस बात की प्रेरणा मिली है कि इस समस्या पर वर्तमान में अनुसंधान कार्य करने की आवश्यकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य– 1. माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना। 2. माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना। 3. माध्यमिक स्तर को छात्राओं को विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण प्रभाव का अध्ययन करना। 4. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर किया। पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना – 1. माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक स्तर का सार्थक प्रभाव पड़ता है। 2. माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक स्तर का सार्थक प्रभाव पड़ता है। 3. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है। 4. माध्यमिक स्तर के छात्राओं में विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अनुसंधान विधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को देखते हुये शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग करते हुये पाँच माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों का चयन किया है जिनमें प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राओं का चयन किया गया।

शोध उपकरण– छात्र–छात्राओं में पारिवारिक वातावरण के लिए डॉ0 तारेश भाटिया एवं डॉ0 चरनजीत कौर तथा विद्यालयी समायोजन के लिए प्रो0 के.पी. सिन्हा एवं प्रो0 आर.पी. सिंह (पटना) द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण– माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का उनके विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सह–सम्बन्ध गुणांक विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के निष्कर्ष– 1. माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का निम्न ऋणात्मक प्रभाव पाया गया। 2. माध्यमिक स्तर की छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण का अत्यन्त निम्न धनात्मक प्रभाव पाया गया। 3. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का उच्च धनात्मक प्रभाव पाया गया। 4. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण का निम्न ऋणात्मक प्रभाव पाया गया।

शैक्षिक अध्ययन का निहितार्थ– पारिवारिक वातावरण एक महत्वपूर्ण चर है जो विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव डालता है। अतः एक परिवार के वातावरण को संतुलित बनाकर बालकों के विद्यालयी समायोजन को बेहतर बनाया जासकता है। घर के वातावरण के प्रति अभिभावकों को जागरुक होने की आवश्यकता है ताकि बालकों को विद्यालयी समायोजन में कठिनाइयों का सामना न करना पड़े। यदि परिवार का परिवेश उत्तम होता है तो बालक विद्यालय में नहीं वरन् समाज में भी अपना समायोजन उचित रूप से स्थापित कर सकता है।

अतः शासन–प्रशासन को ऐसी नीतियाँ सृजित करनी चाहिये जो समाज के सभी वर्गों के जीवन स्तर में सुधार कर सके जिससे उनका पारिवारिक वातावरण उत्तम बन सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, एस.पी. (2009). सांख्यिकीय विधियाँ'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. पिल, एच.के. (1995). ''अनुसंधान विधियाँ'', आगरा हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशक।
3. कपिल, एच.के., सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2।
4. गैरीट, ई. हेनरी, स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन, वाकिल्स फेफर एण्ड सीमोन्स लिमिटेड, बम्बई।
5. पाल एवं घोष (2001) शिक्षकों के मध्य कृत्य संतोष एवं कार्यकुशलता पर अध्ययन A http://education.nic.in/cd50years/g/2gj/0zgj010m.ktm
6. Journal of Indian, Vol. 25, No. 3.
7. A.E.S. Journal of Educational Stud ies (Feb. 2013) Vol. 92, No.1

*****